IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

जनसंचार माध्यम के विविध आयामों का समाज पर पड़ने वाला प्रभाव

संतोष कुमार आर्य

असिस्टेंट प्रोफेसर बी .एड विभाग

नरोत्तम सिंह पदम सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मगरहाँ,मिर्जापुर

शोध सारांश

सभ्यता के उदय के समय से ही मानव समाज ने अपने जनसंचार के तरीके इजाद किये जो विभिन्न रूपों में विकसित हुए तथा समय के साथ परिवर्धित और परिवर्तित होते रहे, जैसे समाचार पत्र, रेडियों, टेलीविजन, सिनेमा, विज्ञापन, कम्प्यूटर, इंटरनेट इत्यादि। जिसे आज हम मास मीडिया शब्द से सम्बोधित करते है। जनसंचार की प्रकृति आज सर्वथा बदल गई है क्योंकि आज का उपभोक्ता अधिकाधिक तथा नवीनतम सुविधाओं की मांग करता है।

मुख्य शब्द – जनसंचार,उपभोक्ता,सूचना क्रांति,मॉस मीडिया

प्रस्तावना - भारत दुनिया में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और अब सूचना क्रांति का केंद्र बन चुका है, इसलिए विकास में मास मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए आज विभिन्न मास मीडिया के भविष्य पर अध्ययन बहुत जरूरी है। सूचना प्रौद्योगिकी के युग को प्राथमिकता देने का कार्य मास मीडिया ही कर रहा है। आज टीवी चैनलों एवं अखबारों में गलत तरीके से पैसे लेकर खबरे देने की प्रवृत्ति खतरनाक है। मास मीडिया का हर किसी के जीवन में बहुत महत्व है यह उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करता है तथा लोगों को महत्वपूर्ण

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, December 2022 Impact Factor: 6.252

जानकारी प्रदान करता है। इस प्रकार यह सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। डेनिस मॅकवील ने इस संदर्भ में कहा है – **"मीडिया समाज परिवर्तन की यंत्रशक्ति है।"** समाज पर मास मीडिया का बहुआयामी प्रभाव प्रमुख है

प्रिंट मीडिया और समाज

मानव एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक होने के नाते वह विभिन्न माध्यमों से समाज की सेवा करता है। प्रिंट मीडिया द्वारा समाज की सेवा एक ऐसा ही सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा जनता को जागरूक किया जा सकता है। इस संदर्भ में मुकुल श्रीवास्तव कहते हैं कि **"प्रिंट मीडिया का कोई विकल्प नहीं है।"** मास मीडिया की वास्तविक शुरूआत भारत में प्रिंट मीडिया से ही हुई। इसकी व्यापक एवं प्रभावी भूमिका 'के कारण ही इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है। इन दिनों सूचना प्रौद्योगिकी की वजह से पत्रकारिता जगत में कई परिवर्तन आए हैं। उपग्रह संचार से अखबारों का स्वरूप बदल रहा है।

गाधीजी ने कहा था. "**पत्रकारिता का उद्देश्य जनसेवा है**।" वे आगे कहते हैं कि जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना तथा सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना इन सभी बातों पर ही प्रिंट मीडिया का महत्व स्थापित है। भारत में टाइम्स ऑफ इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, द हिंदू, हिंदुस्तान टाइम्स, एशियन एज, अमर उजाला, जनसत्ता, दै, भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, हिंदी मिलाफ, लोकमत समाचार जैसे समाचारपत्रों ने अपने सकारात्मक उद्देश्य के बल पर मीडिया और समाज की अस्मिता और विश्वास को बनाए रखा है।

भारतीय प्रिंट मीडिया स्वतंत्रता से पूर्व एक मिशन था। आज़ादी के पश्चात यह पूर्णतः एक व्यवसाय बन गई है। 1990 के दशक ने भारतीय प्रिंट मीडिया ने पत्रकारिता में कई क्रांतिकारी परिवर्तनों के बीज बोए। जब भारत में इंटरनेट क्रांति आई तो समाचारपत्रों के रूप, पृष्ठसज्जा में भी कई आकर्षक परिवर्तन आए। प्रिंट मीडिया सामाजिक बुराइयों से लोगों को मुक्त करने के लिए संकट निवारण का भी कार्य करता है और शोषित और उत्पीडित लोगों को सामाजिक न्याय देने की दिशा में आवाज उठाता है।

दूरदर्शन और समाज

दूरदर्शन मनोरंजन एवं सूचना प्राप्ति का सबसे आकर्षक और प्रभावी मास मीडिया है। दूरदर्शन का पहला प्रसारण 15 सितंबर, 1959 में दिल्ली से शुरू किया गया। सामाजिक विकास एवं देश की अर्थव्यवस्थाओं को सक्षम बनाने की दिशा में दूरदर्शन अग्रणी भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में देश में 300 टेलीविजन चैनलों से कार्यक्रमों का प्रसारण होता है डॉ० संजीव भानावत के अनुसार, "1975 में भारत में उपग्रह द्वारा शिक्षा प्रदान करने के लिए उपयोग किया गया। इससे सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सप्रीमेंट का नाम दिया गया। इस तकनीक से सुदूर इलाकों के ग्रामीण क्षेत्रों में भी पहुंचना संभव हो सका। इसके द्वारा करीब 2,330 गांवों में कृषि, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, सामाजिक शिक्षा, प्राथमिक एवं प्रौढ शिक्षा से संबंधित विकासात्मक कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। इससे सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा मिला। यह आज के संचार माध्यमों में सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण माध्यम है। इसे प्रसारित होने वाले कार्यक्रम एवं विज्ञापन उतने ही महत्वपूर्ण और प्रभावशाली हैं, जो समाज पर स्वतंत्र रूप से अपनी छाप छोड़ते हैं। यह संचार का ऐसा सशक्त साधन है जो लोकजीवन को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता। दूरदर्शन पर इसी तरह की चिंताओं को बहुत सारे लोगों ने विशेषज्ञों तथा समाज तथा समाज चिंतकों ने समय-समय पर प्रकट किया है। विदेशी टेलीविजन भारतीय संस्कृति एवं पारिवारिक मूल्यों पर आक्रमण कर रहा है। इस तरह हम देखते हैं कि सामाजिक बदलाव के मूल्यों की एक नयी परिभाषा दूरदर्शन ने अपने प्रचार-प्रसार के माध्यमों द्वारा विकसित की है।

सिनेमा और समाज

निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि सिनेमा हमारे जीवन की गति को वे लयबद्ध रूप में एवं कलात्मक दृष्टि से हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है। सिनेमा से जुड़े अधिकांश लोगों के लिए सिनेमा अनुभव और अन्वेषण का माध्यम है। सिनेमा को आधुनिक युग का जादू कहा गया है क्यों कि किशोरों तथा युवाओं पर सर्वाधिक प्रभाव सिनेमा का पड़ता है। सिनेमा के माध्यम से वस्तु स्थिति को समाज के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

परंपरावादी एवं रूढ़िवादी समाज में परिवर्तन, जागरूकता तथा सुधार लाने में सिनेमा महत्वपूर्ण कार्य करती है। फिल्मों के विषय समाज एंव समाज के अनुसार बदलते रहते हैं। समाज का हर पहलू, विषय एवं समस्याएं, फिल्मों में चित्रित किया जाता हैं और इस तरह से भारतीय संस्कृति के महत्व को प्रतिपादित करने वाली मनोज कुमार की पूरब और पश्चिम में भी सामाजिक समस्याएं चित्रित की गई। संयुक्त परिवार एवं पारिवारिक विघटन पर आधारित फिल्में घर हो तो ऐसा, संसार, खानदान, स्वर्ग-नरक, काला बाजार, भ्रष्टाचार आदि आई। इन फिल्मों ने सामाजिक सुधार प्रस्तुत किया है। सच्चाई, ईमानदारी, नैतिकता जैसे मूल्य इन फिल्मों में दर्शाए गए। अंतरजातीय विवाह एवं सांप्रदायिकता जैसे सामाजिक प्रश्नों को लेकर बांबे फिल्म बनाई गई जो बहुत लोकप्रिय हुई। समाज में प्राचीनकाल से चली आ रही दहेज प्रथा का चित्रण अनेक फिल्मों में हुआ है। जैसे बहु की आवाज, राजमणि आदि फिल्में इस प्रकार के विषय को प्रस्तुत कर सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है।

रेडियों और समाज

रेडियो श्रव्य संचार साधनों के रूप में अत्यंत उपयोगी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आजादी के समय भारत में छह रेडियो स्टेशन और 18 ट्रांसमीटर थे और देश की 11 प्रतिशत आबादी और 2.5 प्रतिशत क्षेत्र इसके प्रसारण दायरे में आता था। आज प्रसार भारती रेडियो के नेटवर्क में 232 स्टेशन और 171 एफ०एम० ट्रांसमीटर हैं और देश की 99.13 प्रतिशत जनसंख्या तथा 91.42 प्रतिशत क्षेत्र इसके दायरे में आता है। पत्रकारिता में रेडियों का महत्वपूर्ण स्थान है। विदेशों के लिए आकाशवाणी का एक अलग विभाग है जो 16 भाषाओं में प्रतिदिन 20 घंटे कार्यक्रम प्रसारित करता है। इसका उद्देश्य मुख्यतः भारतीय नीति तथा भारतीय संस्कृति से विदेशी जनता और प्रवासी भारतीयों को परिचित कराना है। आकाशवाणी अपनी गुणवत्ता के कारण पूरे देश में लोकप्रिय रही है। ग्रामीण श्रोता मंडलों की स्थापना से देहाती जनता में नवचेतना का प्रार्दुभाव देखा जा रहा है। आकाशवाणी द्वारा देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक ऐतिहासिक आदि क्षेत्र में उन्नति हो रही है। आकाशवाणी केंद्रों से आम नागरिकों के लिए कार्यक्रम प्रसारित किए जाने के साथ-साथ विशिष्ट वर्गों एवं विद्यार्थियों, महिलाओं, श्रमिकों, किसानों, बच्चों और युवाओं के लिए अलग से कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। सामाजिक परिवर्तन में रेडियो प्रेरक

भूमिका निभाता है। वर्तमान में विज्ञापन, आधुनिकता और दुनियाभर की अच्छी बातों की जानकारी रेडियो द्वारा दी जाती है। रेडियो अपनी मौलिक विशेषताओं के कारण टेलीविजन एवं फिल्म की अपेक्षा भारतीय समाज में अपना अनूठा स्थान बना पाया है तथा सर चढ़कर बोल रहा है।

विज्ञापन और समाज

विज्ञापन अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। प्रमुख रूप से यहाँ हमारे विश्व की अर्थव्यवस्था के हलचल से जुड़ा है। इतना ही नहीं तो सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों से भी इसके गहरे संबंध हैं। विज्ञापनों के कारण समाज परिवर्तित हो रहा है। भाषा एवं लिपि की उत्पत्ति है। विज्ञापन और समाज का चोली-दामन का संबंध है। प्राचीनकाल से विज्ञापन और समाज का अंतःसंबंध रहा है। विज्ञापन समाज में जनमत तैयार करते हैं। इसलिए आज विज्ञापन समाज के साथ संबंध स्थापित करने वाला ठोस माध्यम है। सुजाता वर्मा के अनुसार, "आज किसी वस्तु अथवा सेवा का प्रचार-प्रसार जितना विज्ञापन के माध्यम से किया जा सकता है अन्य किसी माध्यम से नहीं किया जा सकता। प्रतिदिन दुनियाभर के लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं के प्रचार से उनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और आवश्कतानुसार उनका उपयोग भी करते हैं।" विज्ञापन मीडिया जनता में रूचि और विश्वास उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होता है। आज सूचना प्रोद्योगिकी के युग में विज्ञापन जनसंचार का प्रभावी माध्यम सिद्ध हुआ है।

कम्प्यूटर, इंटरनेट और टेली कॉन्फ्रेंसिंग समाज

कम्प्यूटर को आधुनिक दूरसंचार प्रणाली की आत्मा कहा जाता है। कम्प्यूटर द्वारा दूरसंचार, उपग्रह संचार, रेडियो, टीवी, समाचार पत्र-पत्रिकाएं एवं शिक्षा के क्षेत्र में नयी क्रांति आई है। टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स प्रणालियों में कम्प्यूटर का उपयोग आज आम बात हो गई है। कम्प्यूटर के कारण समाचार प्रेषण में क्रांति आई है। एक समय था जबकि कबूतर द्वारा संवाद भेजे जाते थे। जो धीमी गति से गंतव्य तक कभी पहुंचते तो कभी बीच में ही खो जाते थे। अब कम्प्यूटर के कारण तत्काल समाचारपत्र कार्यालय में पहुंच जाते हैं। वस्तुतः आज कम्प्यूटर के सहयोग से

मुश्किल से मुश्किल कार्य भी सरल हो गया है तथा इसकी वजह से घंटों के कार्य मिनटों में हो जाते हैं। कंप्यूटर वस्तुतः आंकड़ों की संख्याओं के जोड़ को कुछ ही सेकंड में पूर्ण कर देता है तथा कंप्यूटर में बड़ी मात्रा में सूचनाओं को संजोकर रखने की अपार क्षमता होती है l ज्ञान समाज के निर्माण में कम्प्यूटर इंटरनेट मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साइबर सोसायटी के साथ वैश्वीकरण ने समाज को टेक्नोक्रैटिक समाज में परिवर्तित कर दिया है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, मल्टी मीडिया थिंक टैक के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। यह मशीन हमारे जीवन का अविभाज्य अंग बन गया है और ई-प्रशासन व्यवस्था में कम्प्यूटर बहुआयामी साधन बन चुका है।

आज मानव समाज के सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर इंटरनेट तकनीक ने अपना प्रभुत्व सिद्ध किया है। इंटरनेट पर उपलब्ध सेवाओं का प्रयोग व्यक्ति अपनी रुचि, समय व स्थान के आधार पर कर सकता है ! इंटरनेट का प्रयोग देश-विदेश के विशेषज्ञों से वार्तालाप करने तथा दूर कक्षाओं में होने वाले गतिविधियों वार्ताओं तथा व्याख्यानों को देखने व सुनने के लिए कर सकते हैं! टेली कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा विषय विशेषज्ञ से अपनी समस्याओं तथा प्रश्नों के समाधान के संबंध में वार्ता कर सकते हैं इंटरनेट पर सभी सूचनाओं को 24 घंटे प्राप्त कर सकते हैं ! इंटरनेट का उपयोग एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर को प्रदत्त उपलब्ध कराना,उपयोगी सेवाएं तुरंत उपलब्ध कराना,समाज के किसी भी क्षेत्र शिक्षा खेल राजनीति आदि की सूचना उपलब्ध कराना है!

इसी प्रकार टेली कॉन्फ्रेंसिंग एक प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है जिसे हिंदी में "दूर संवाद प्रणाली" के नाम से भी जाना जा सकता है ! इस प्रणाली में अलग-अलग दूर स्थान पर बैठे हुए दो या दो से अधिक व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की सहायता से परिचर्चा में भाग ले सकते हैं, अपनी बातें कर सकते हैं और दूसरों की बात सुनकर अपनी प्रक्रिया व्यक्त कर सकते हैं अर्थात सामूहिक संप्रेषण संवाद संभाषण और अंतर क्रियाएं कर सकते हैं ! ठीक उसी प्रकार जैसे दो व्यक्ति आमने-सामने बैठकर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं ! आज यह पूर्ण रूप से संभव हो गया है कि हजारों दूर बैठे हुए व्यक्ति इस प्रकार संभाषण एवं वार्तालाप कर सकते हैं जैसे वे एक छत के नीचे आमने-सामने बैठकर अंतर संप्रेषण एवं अंतर क्रियाएं कर रहे हैं ! संप्रति सर्वत्र कम्प्यूटर का वर्चस्व है। उद्योग, शिक्षा, यातायात नियंत्रण, चिकित्सा सुविधा, चुनाव संबंधी भविष्यवाणियां, मौसम संबंधी सूचनाएं और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 2, Issue 1, December 2022 Impact Factor: 6.252

कानून व्यवस्था को अधिक कारगर बनाने में कम्प्यूटर सर्वाधिक सक्षम है। मास मीडिया में अभूतपूर्व क्रांति लाने में इसकी अहम भूमिका है। इसके माध्यम से मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। सामाजिक परिवर्तन में तथा समाज के विकास के लिए यह उपयुक्त है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जनसंचार माध्यम आधुनिक समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा तथा सोशल मीडिया ने सूचना और ज्ञान के प्रसार को तीव्र एवं व्यापक बनाया है। इन माध्यमों ने जन-जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा के विस्तार, लोकतांत्रिक सहभागिता, सामाजिक सुधार तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से डिजिटल और सोशल मीडिया ने आम नागरिक को सूचना प्राप्त करने के साथ-साथ अपनी अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान किया है।

हालाँकि, जनसंचार माध्यमों के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते हैं। फेक न्यूज़, अफवाह, भ्रामक विज्ञापन, सनसनीखेज समाचार, निजता का उल्लंघन तथा सोशल मीडिया की अत्यधिक निर्भरता सामाजिक तनाव और भ्रम को बढ़ा सकती है। अतः जनसंचार माध्यम समाज के विकास के प्रभावी साधन तभी बन सकते हैं, जब उनका उपयोग जिम्मेदारी, नैतिकता और तथ्यपरकता के साथ किया जाए। मीडिया साक्षरता, तथ्य-जाँच और उत्तरदायी पत्रकारिता को बढ़ावा देकर इसके सकारात्मक प्रभावों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ

1. वार्षिक रिर्पोट-2010 सूचना एवं तकनीकी मंत्रालय भारत सरकार।
2. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना दस्तावेज भाग-प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय।
3. योजना, भारत सरकार विभिन्न अंक।
4. शैक्षिक तकनीकी एवं कंप्यूटर सह -अनुदेशन : जे. सी.अग्रवाल और एस.पी. कुलश्रेष्ठ, अग्रवाल पब्लिकेशंस आगरा !